

हंसा- मर मर सीं आँखियाँ चलत बिरिया
 उड़ गयो आँखों में... ॥१॥ तर गई रे में सवरिया चलत बिरिया
 पिंजरा धरो धरनी में... ॥३॥ तर गई में तो सवरिया.....
 ओरे पिंजरा धरो धरनी में... ॥३॥

आये बराती उदौनों लेखे
 चास और बाँस विदौनों लेखे
 खूब सजा दई पुतरिया

चलत बिरिया--- तर गई---

सब मिल डोला मेरो उठा रय
 सूनी आँखे नीर बहा रय
 आज बता दई डगरिया

चलत बिरिया--- तर गई---

रो-रो हंसा कहे काया से
 काय फसे रहे तुम माया से
 हूटी महल अटरिया

चलत बिरिया--- तर गई---

नाई बतेसा कोई फेंके
 ऊंचे अटा से मोखों देखे
 ले-चले आग मटकिया

चलत बिरिया--- तर गई---

झाड़ तरें मोहे सबने उतारो
 में जानी मेरो दूटो सहारो
 आ गई पूरी नगरिया

चलत बिरिया---- तर गई----

चलतई- चलत गये यूने में
 इत-उत बैठ रोयें कौने में
 मोखो बिहवा दई लकड़िया

चलत बिरिया---- तर गई----

जल गई जैसे- जली हो छेरी
 बालन मानी- रेंयाँ ने मोरी
 खूब रंगा दई चुनरिया

चलत बिरिया---- तर गई----

जा चुनर तुम कोरी राखो
 कहें "श्री बाबा श्री" मर्खे चरणों में राखो
 तर जेहे मेरी उमरिया

चलत बिरिया-- तर गई----